

॥ पंचायतन आरती ॥

---

अघसंकटभयनाशन सुखदा विग्धेशा ।  
आद्या सुरवरवंद्या नरवारण वेशा ॥  
पाशांकुशधर सुंदर पुरवीसी आशा ।  
निजवर देऊनि हरिसी भ्रांतीच्या पाशा ॥ १ ॥

जय देव जय देव जय सुखकर मूर्ती ।  
गणपति हरी शिवभास्कर अंबा सुखमूर्ती ॥ धृ ॥

पयसागरजाकांता धरणीधरशयना ।  
करुणालय वारिसि भववारिजदलनयना ॥  
गरुडध्वज भजन प्रिय पीतप्रभवसना ।  
अनुदिनिं तव कीर्तनरस चाखो हे रसना ॥ जय ॥ २ ॥

नंदीवहना गहना पार्वतिच्या रमणा ।  
मन्मथदहना शंभो वातातमजनयना ॥  
सर्वोपाय विवर्जित तापत्रयशमना ।  
कैलासाचलवासा करिसी सुरनमना ॥ जय ॥ ३ ॥

पद्मबोधकरणा नेत्रभ्रमहरणा ।  
गोधन बंधनहरता द्योतक आचरणा ॥  
किरण स्पर्शें वारिसि या तम आवरणा ।  
शरणागत भयनाशन सुखवर्धनकरणा ॥ जय ॥ ४ ॥

त्रिभुवनउत्पति पालन करिसीइ तूं माया ।  
नाहीं तुझिया रूपा दुसरी उपमा या ॥  
तुझा गुणगणमहिमा न कळे निगमा या ।  
करुणा करिसी अंबे मनविश्रामा ॥ जय ॥ ५ ॥